SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 5

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

भाग - 6

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

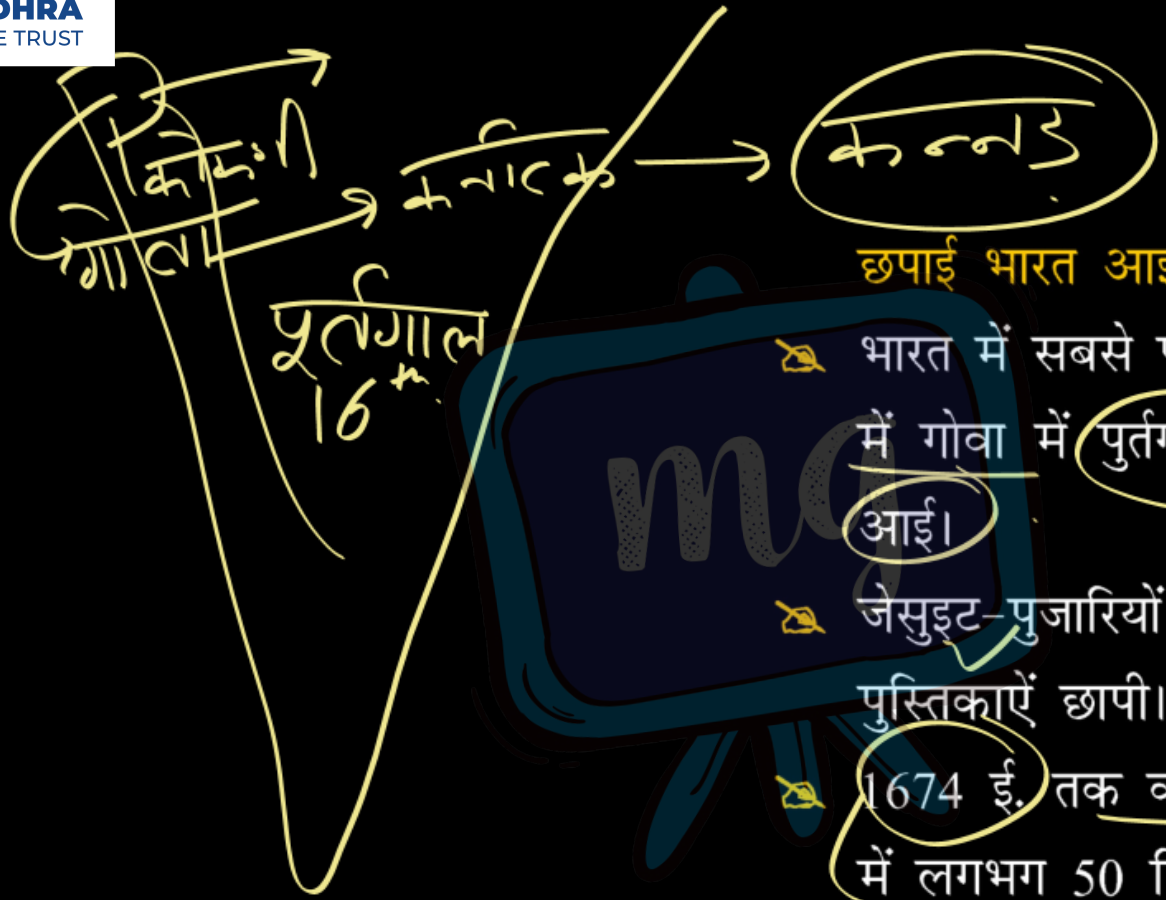

छपाई भारत आई :-

- भारत में सबसे पहले प्रिंटिंग-प्रेस 16वीं सदी में गोवा में पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के साथ आई।
- जेसुइट-पुजारियों ने कोकणीं सीखी और कई पुस्तिकाऐं छापी।
- 1674 ई. तक कोंकणी और कन्नड़ भाषाओं में लगभग 50 किताबें छप चुकी थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

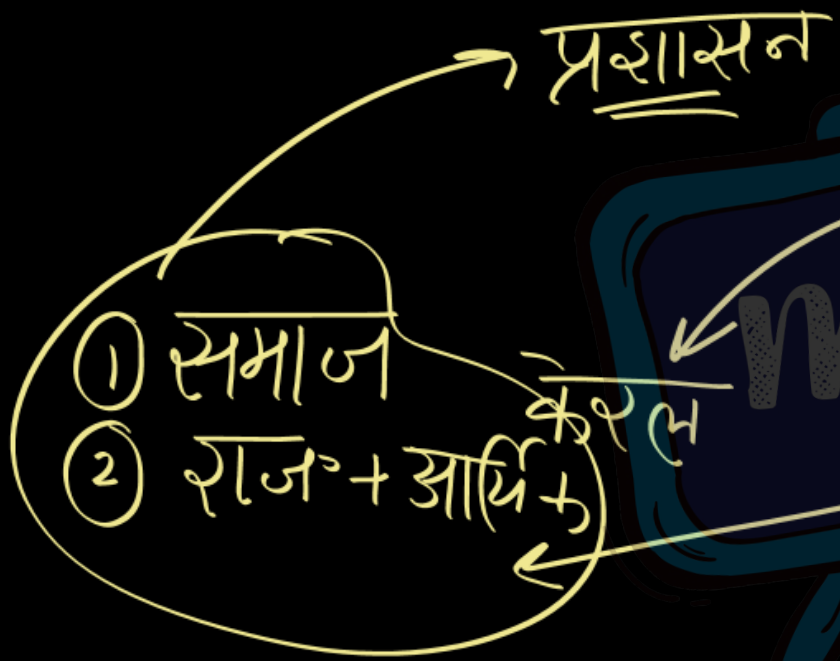

- कैथोलिक पुजारियों ने 1579 मे कोचीन में पहली तमिल किताब और उन्होंने 1713 में पहली मलयालम किताब भी छापी।
- डच प्रोटेस्टेंट धर्म प्रचारकों ने भी 32 तमिल किताबें छापीं जिनमें से कई पुरानी किताबों का अनुवाद थीं।
- अंग्रेजी भाषी प्रोष भारत में काफी समय तक विकास नहीं कर पाया था, यद्यपि ईस्ट इंडिया कंपनी ने 17वीं सदी के अंत तक छापेखाने का आयात शुरू कर दिया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.

भारत → व्यापारवाने

पूर्तगाली = धर्म प्रचारक

धर्म +ve = जनसामान्य

कोंकणी + कन्नड

डच → तमिल अनुवाद ?

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भारत में मुद्रण संस्कृति की शुरुआत किस प्रकार हुई?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यूरोपीय

राजनीतिक (परिवर्तन)

बंगाल गजट → जेम्स हिक्की

हिक्की की साप्ताहिक-पत्रिका :-

- 1780 से जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने बंगाल गजट नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन शुरू किया।
- उसने खुद को यूं परिभाषित किया - "हर किसी के लिए खुली एक व्यवसायिक पत्रिका, जो किसी के प्रभाव में नहीं है।"
- यानी यह पत्रिका भारत में प्रेस चलाने वाले औपनिवेशिक शासन से आजाद, निजी अंग्रेजी उद्यम थी और इसे अपनी स्वतंत्रता पर अभिमान था।



- हिक्की ढेर सारे विज्ञापन छापता था, जिसमें दासों की बिक्री से जुड़े इश्तेहार भी शामिल थे।
- लेकिन साथ ही वह भारत में कार्यरत वरिष्ठ अंग्रेज अधिकारियों से जुड़ी गपबाजी भी छापता था।
- इससे नाराज होकर गवर्नर जनरल वारेन-हेस्टिंग्स ने हिक्की पर मुकदमा कर दिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पत्रकारिता अग्रदूत

- साथ ही ऐसे सरकारी आश्रय प्राप्त अखबारों के प्रकाश को प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया जो औपनिवशिक राज की छवि पर होते हमलों से इसकी रक्षा कर सकें।
- 18वीं सदी के अंत तक कई सारी पत्र-पत्रिकाऐं छपने लगीं।
- कुछ हिंदुस्तानी भी अपने अखबार छापने लगे थे।
- इन प्रयासों में पहला था राजा राममोहन राय के करीबी रहे गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित बंगल गजट।

विलियम बोल्ट्स नामक एक व्यक्ति को 1768 ई. में, इस तरह की एक सूचना कलकत्ता की एक सार्वजनिक इमारत में टाँगने की जरूरत महसूस हुई–

"जनसाधारण के लिए : मि. बोल्ट्स पब्लिक को यह बताने के लिए इस तरीके का सहारा ले रहे हैं कि – चूंकि शहर में छापेखाने की घोर कमी से नुकसान होता है..... इसलिए वे उस व्यक्ति का हर संभव उत्साहवर्धन करेंगे, जो छपाई में माहिर हो।"

पर जल्द ही मि. बोल्ट्स इंग्लैंड चले गये और यह वादा हवा में लटका रहा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

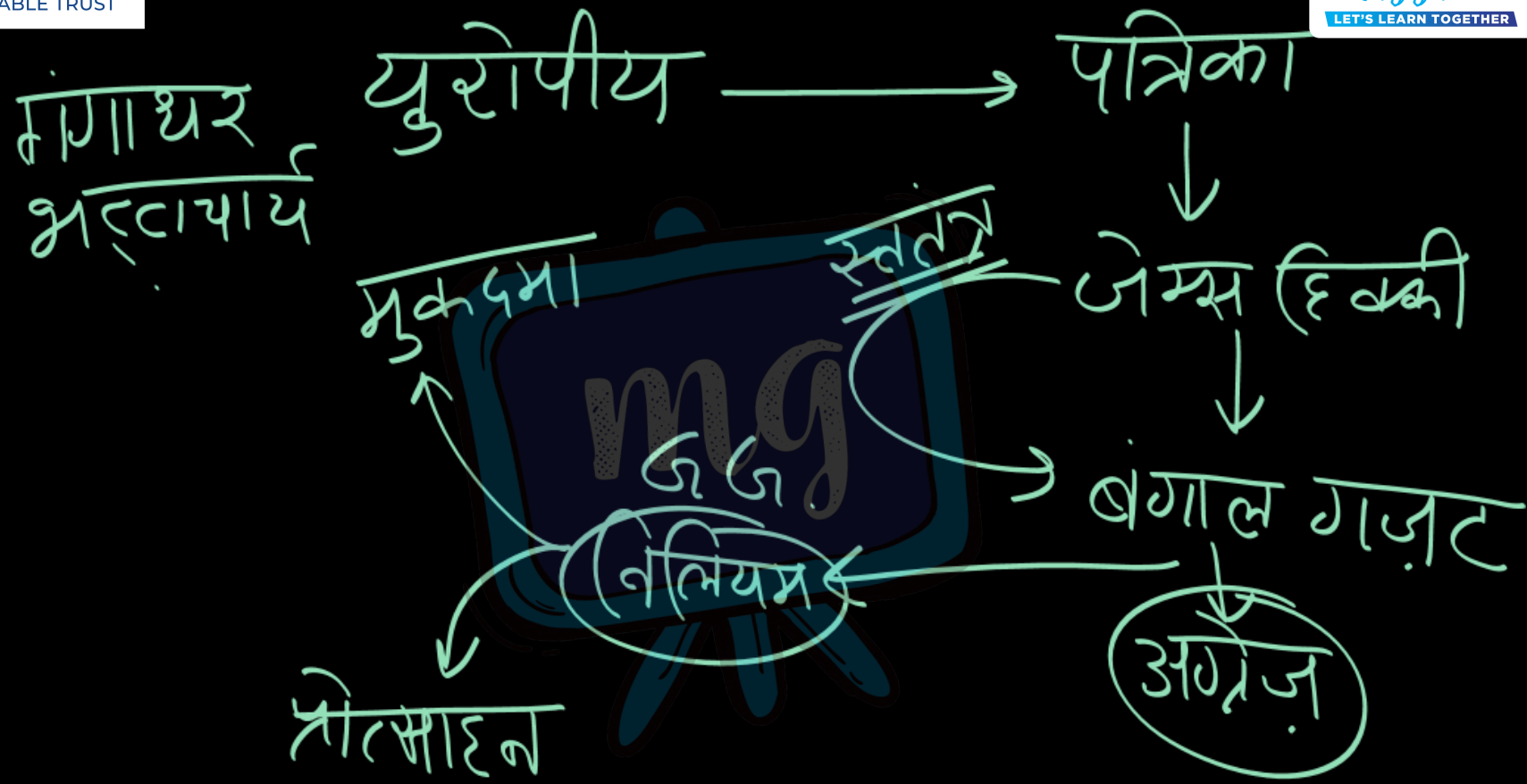

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

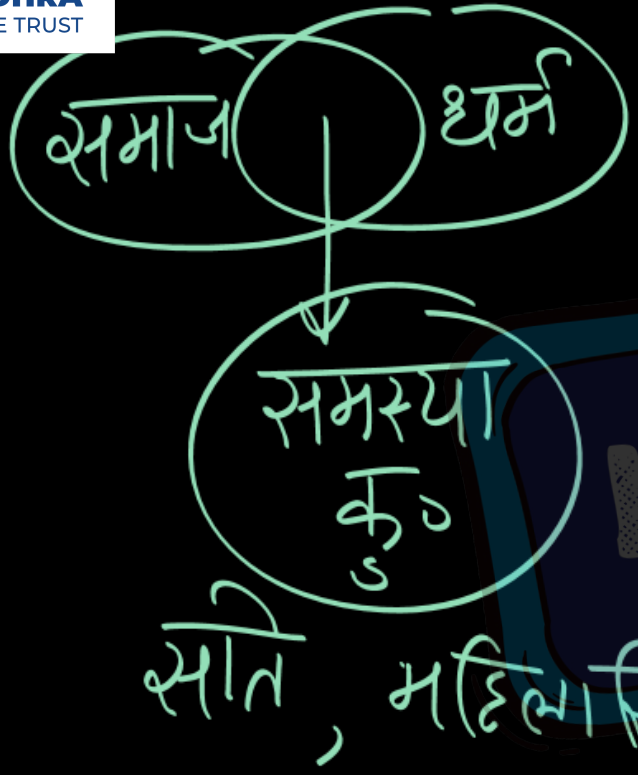

धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसें

- 19वीं सदी की शुरूआत से ही धार्मिक मामलों को लेकर बहसों का बाजार गर्म था।
- औपनिवेशिक समाज में हो रहे बदलावों से जूझते हुए, विभिन्न समूह धर्म की अपनी अपनी व्याख्या पेश कर रहे थे।
- कुछ तो मौजूदा रीति-रिवाजों की आलोचना करते हुए उनमें सुधार चाहते थे।
- जबकि कुछ अन्य समाज सुधारकों के तर्कों के खिलाफ खड़े थे।
- ये सारे वाद-विवाद प्रिंट में होने से सरेआम पब्लिक में हुए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- छपी हुई पुस्तकों और अखबारों ने न केवल नये विचारों का प्रचार प्रसार किया बल्कि उन्होंने बहस की शक्ल भी तय की।
- इन बहसों में व्यापक जन-समुदाय भी हिस्सा ले सकता था, अपना मत जाहिर कर सकता था।
- इस तरह के मत मतांतर से नये विचार उभरे।
- यह वह समय था जब समाज और धर्म-सुधारकों तथा हिंदु रूढ़िवादियों की बीच विधवा-दाह, एकेश्वर वाद, ब्राह्मण पुजारी वर्ग तथा मूर्तिपूजा जैसे मुद्दों को लेकर तेज बहस ठनी हुई थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

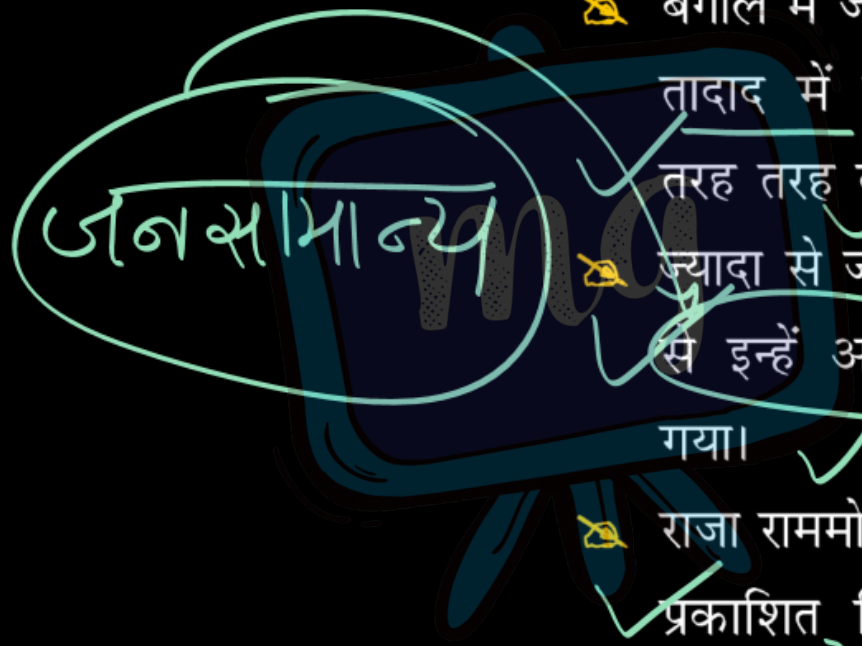

- बंगाल में जैसे-जैसे बहस चली, लगातार बढ़ती तादाद में पुस्तकों ओर अखबारों के जरिये तरह तरह के तर्क समाज के बीच आने लगे।
- ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचने के ख्याल से इन्हें आम बोलचाल की भाषा में छापा गया।
- राजा राममोहन राय ने 1821 से संवाद कौमुदी प्रकाशित किया ओर रूढ़िवादियों ने उनके विचारों से टक्कर लेने के लिए समाचार चंद्रिका का सहारा लिया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- दो फारसी अखबार भी 1882 से प्रकाशित हुए –
  (i) जाम-ए-जहाँ नामा
  (ii) शम्सुल अखबार

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

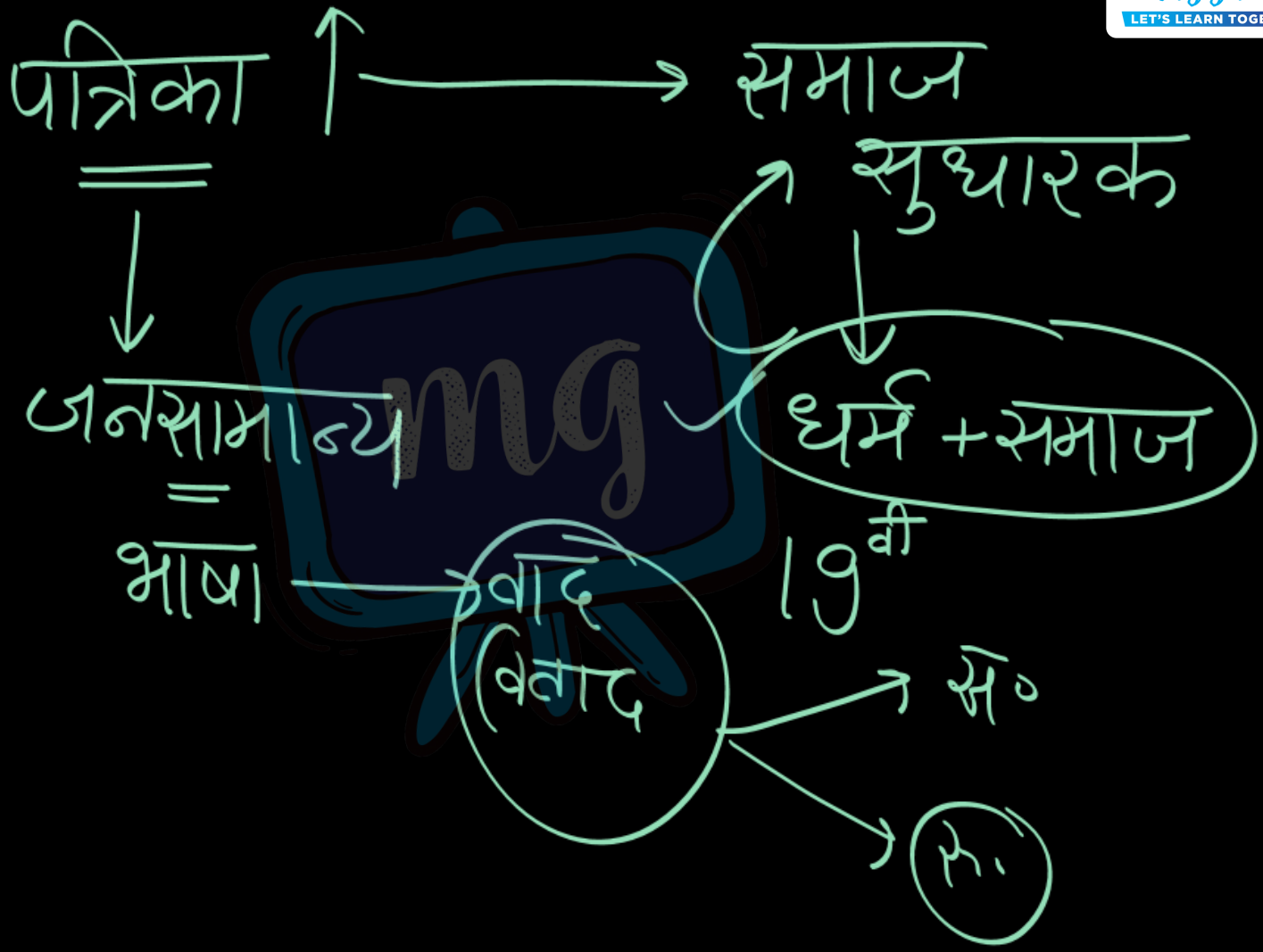

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. समाज सुधारकों ने मुद्रण संस्कृति का इस्तेमाल किस प्रकार किया?

OR

Q. सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन में अखबार की भूमिका को स्पष्ट करें?